IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"व्यावसायिक नीतियों के निर्धारण मे, व्यावसायिक अर्थशास्त्र की उपयोगिता का अध्ययन"

रामखगेश पटेल
शोधार्थी–
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड
विश्विद्यालय छतरपुर मध्यप्रदेश

पुष्पराज पटेल
शोधार्थी–
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड
विश्विद्यालय छतरपुर मध्यप्रदेश

सरांश– 21वी सदी में तीव्र आर्थिक परिर्वतन के साथ–साथ उदारीकरण, भूमण्डीकरण और विश्वव्यापी बाजार ने व्यावसायिक एवकमों और उनके प्रबन्धन के समक्ष नवीन समस्याओं और अवसरों को प्रस्तुत किया है। जिसका पता लगाने के लिए व्यवसाय के वातावरण एवं आर्थिक सिद्धान्तो के अध्ययन के लिए व्यावसायिक अर्थशास्त्र का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। व्यावसाय से जुडे सभी व्याक्तियों को व्यावसाय में प्रयोग होने वाले सभी आर्थिक सिद्धान्तो की जानकारी होनी चाहिए ता की वह व्यावसाय का संचालन सही प्रकार से कर सके। वर्तमान समय प्रतिस्पर्ध का है। अतः व्यावसाय में बने रहने के लिए भी व्यावसायिक अर्थशास्त्र का ज्ञान आति आवश्यक है।

प्रस्तावनाः–

व्यावसाय प्रबन्धन के लिए अर्थशास्त्र का ज्ञान होना आति आवश्यक है उसमे भी व्यावसायिक अर्थशास्त का ज्ञान अति आवश्यक है। 1950–60 के दशक के बाद बड़ी–बड़ी फर्मों का विकास हुआ। फर्मों में व्यावसायिक कार्यों में जटिलता आई। उत्पादन स्तर, उत्पादन की गुणवत्ता, उत्पादन का स्टाकॅ, वस्तुओ की कीमत, वस्तु की माँग का अनुमान इत्यादि कुछ ऐसी आर्थिक समस्याएँ प्रबन्धके के सामने आती थी। प्रबन्धक के पास निश्चित साधन होते थे और उन्हीं साधनों की सहायता से फर्म का विकास करना होता था। किसी प्रबन्धक की समस्या का आसानी से समाधान करने के लिए अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों का प्रयोग हुआ, जिससे धीरे–धीरे व्यावसायिक अर्थशास्त्र का महत्व बढ़ा।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र को कई नामों से पुकारा जाता है जैसे– 1– व्यवसायिक अर्थशास्त्र 2– फर्म और उद्योग का अर्थशास्त्र 3– व्यवसायिक प्रबन्ध का अर्थशास्त्र 4– प्रबंधक के लिए अर्थशास्त्र 5– व्यवसायिक निर्णय का अर्थशास्त्र 6–प्रबन्धकीय अर्थशास्त्र आदि

स्पेप्सर तथा सीगिलमैन व्यावसायिक अर्थशास्त्र को निम्न शब्दों में परिभाषित किया है, "व्यावसायिक अर्थशास्त्र , अर्थशास्त्र के सिद्धान्त तथा व्यापार पद्धति का इस उद्देश्य से किया गया समन्वय है कि "प्रबन्धकों को निर्णय लेने तथा भावी नियोजन करने में सुविधा हो।"[1]

इस परिभाषा के अनुसार व्यावसायिक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों तथा व्यापार पद्धतियों का समन्वय है। यह समन्वय इस उद्देश्य से किया गया है कि प्रबन्धकों को अपने व्यवसाय की विभिन्न क्रियाओं के सम्बन्ध में निर्णय

लेने तथा भविष्य के सम्बन्ध में नियोजन करने में सुविधा हो। यहाँ इस परिभाषा को समझने के लिए दो शब्दों का अर्थ समझ लेना अधिक उपयोगी होगा। प्रथम निर्णय कार्य एवं द्वितीय भावी नियोजन। एक प्रबंध का प्रमुख कार्य निर्णय एवं भावी नियोजन होता है। निर्णय का तात्पर्य दो या दो से अधिक वैकल्पिक में से किसी एक का चुनाव करना होता है तथा भावी नियोजन का तात्पर्य भविष्य के लिए योजनाएं बनाना होता है। चुनाव की समस्या इसलिए उत्पन्न होती है कि उत्पादन के विभिन्न साधन–भूमि, श्रम, पूँजी, उद्यमी आदि सीमित मात्राा में उपलब्ध होते हैं तथा इनके वैकल्पिक उपयोग सम्भव होते हैं, अतः एक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निर्णय द्वारा विभिन्न विकल्पों में से सर्वोत्तम विकल्प का चुनाव करना हाता है।

व्यावसायिक प्रबन्ध में व्यावसायिक अर्थशास्त्र के उपयोग के विभिन्न आयमः[2]–

व्यावसायिक प्रबन्ध में अर्थशास्त्र के उपयोग के प्रमुख विभिन्न अयाम निम्नलिखित हैंः– व्यावसायिक अर्थशास्त्र परम्परागत सैद्धान्तिक धारणाओं तथा वास्तविक व्यावसायिक व्यवहार तथा दशाओं के मध्य समन्वय स्थापित करता है। आर्थिक विश्लेषण में कुछ मॉडल बनाये जाते हैं तथा ये मॉडल कुछ मान्यताओं पर आधारित होते है। इन मॉडलों के आधार पर फर्म के व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ निष्कर्ष निकाले जाते है। परन्तु इस प्रकार के निष्कर्ष इन मान्यताओं के कारण अवास्तविक बन जाते हैं क्योंकि वास्तविक जीवन में फर्म जिस प्रकार का व्यवहार करती है उसका संतोषजनक स्पष्टीकरण इन सिद्धान्तों से नहीं हो पाता है। अतः व्यावसायिक अर्थशास्त्र के द्वारा इन आर्थिक मॉडलों को अधिक सरल मान्यताओं पर आधारित बनाकर वास्तविक व्यावसायिक व्यवहारों के अधिक अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र कार्य[2क]:–

1– प्रत्येक फर्म का उद्देश्य सदैव लाभ अधिकतम करना नहीं होता है और इस तरह फर्म सिद्धांत फर्म के वास्तविक व्यवहार का संतोषजनक स्पष्टीकरण प्रदान करने में असफल रहता है। 2–व्यावसायिक अर्थशास्त्र व्यावसायिक प्रबन्ध में अर्थशास्त्र के प्रयोग का क्षेत्र आर्थिक सम्बन्धों को अनुमानित करने के रूप में प्रस्तुत करता है। जैसे वस्तु की मांग सम्बन्धी लोच को मापना अर्थात् वस्तु की आय लोच, मूल्य लोच, तिरछी लोच तथा प्रोत्साहन लोच कितनी है। वस्तु की लागत तथा उत्पादन में क्या सम्बन्ध है तथा वस्तु के मूल्य तथा आगम में क्या सम्बन्ध है आदि का अनुमान करने में आर्थिकविश्लेषण सहायक होता है। इन आर्थिक सम्बन्धों का उपयोग व्यावसायिक पूर्वानुमानों के लिए किया जाता है। अधिकांश भावी नियोजन पूर्वानुमानों पर आधारित होता है। 3 आर्थिक मात्राओं की संख्या के रूप में उनकी सम्भावनाओं के सभी पूर्वानुमान करने में भी आर्थिक सिद्धान्त प्रबन्धकों को सहायता पहुंचाते हैं। जैसाकि हम सब जानते हैं कि सामान्यतया प्रत्येक व्यावसायिक प्रबन्धक को अनिश्चितता के वातावरण में काम करना पड़ता है अतः उसे भावी पूर्वानुमान की आवश्यकता होती है जिससे वह भावी पूर्वानुमानों के आंकड़ों के आधार पर निर्णय ले सकें तथा भावी नियोजन कर सके। व्यावसायिक भावी मांग, मूल्य, लागत, पूँजी, लाभ आदि का संख्या के रूप में उनकी सम्भावना के साथ पूर्वानुमान लगाता है। ये पूर्वानुमान निर्णय के लिए महत्वूपर्ण होते है। 4 व्यावसायिक अर्थशास्त्र व्यावसायिक प्रबन्धक, को भावी नियोजन एवं निर्णय कार्य में आर्थिकमात्राओं के उपयोग करने तथा व्यावसायिक नीति निर्धारण में सहायता पहुंचाता है। भावी पूर्वानुमानों के आधार पर व्यावसायिक प्रबन्धक भविष्य के लाभ, मूल्य, लागत, पूँजी आदि के सम्बन्ध में अपनी नीति निर्धारण करता है तथा उपलब्ध

विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प को चुनता है। प्रबन्धकीय अर्थशास्त्र प्रबन्ध के सामने एक परिणामत्मक चित्रा प्रस्तुत करता है तथा स्पष्ट करता है कि कौन–कौन से मार्ग उपलब्ध हैं, उनके क्या सम्भव परिणाम होंगे तथा प्रत्येक परिमाण करता है कि कौन–कौन से मार्ग उपलब्ध हैं, उनके क्या सम्भव परिणाम होगें तथा प्रत्येक परिणाम की क्या सम्भावना है। प्रबन्धक इस चित्रा के आधार पर किसी एक उपयुक्त मार्ग को चुनता है। 5 व्यावसायिक अर्थशास्त्र व्यावसायिक प्रबन्धक को उस बाह्य वातावरण को समझने तथा व्यवसाय को उसके साथ समायोजित करने का मार्ग बताता है जिसमें एक फर्म को कार्य करना पड़ता है। उदाहरणार्थ व्यापार चक्र, राष्ट्रीय आय में उतार–चढ़ाव, विदेशी व्यापार, करारोपण, श्रम काननू, श्रम सम्बन्ध, एकाधिकार विराधेी अधिनियम, आद्यौगिक लाइसेन्सिगं, मल्यू नियन्त्राण आदि के सम्बन्ध में सरकारी नीतियों का व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ेगा तथा फर्म की नीतियों को किस प्रकार इनके साथ समायोजित किया जाए आदि की जानकारी व्यावसायिक अर्थशास्त्र देता है।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र[3]:–

व्यावसायिक अर्थशास्त्र का कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत है क्योंकि इसमें वे सभी आर्थिक सिद्धान्त, अवधारणाएँ, मॉडल्स तथा विधियाँ सम्मिलित होती हैं जो व्यावसायिक फर्मों के प्रबन्धकों को निर्णयन तथा भावी नियोजन में सहायक होती हैं। सामान्यतया आर्थिक विश्लेषण के निम्न पहलू इसके कार्य–क्षेत्रा में आते हैं : 1 माँग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान व्यावसायिक फर्म उत्पादन के साधनों को ऐसी वस्तुओं में बदलने का कार्य करता है जिन्हें बाजार में मुद्रा के बदले बेचा जा सके। फर्म अनिश्चितता के वातावरण में भावी पूर्वानुमानों के आधार पर ही कार्य करती है। प्रबन्धकों के निर्णय मांग के सही अनुमानों पर निर्भर करते है। प्रबन्धकों के लिए फर्म की उत्पादन सारणियों का निर्धारण करने तथा उत्पादन के साधनों को उत्पादन कार्य में प्रयुक्त करने से पूर्व यह अत्यन्त आवश्यक है कि भावी विक्रय के सही पूर्वानुमान लगाये जाएं। भावी विक्रय–पूर्वानुमान फर्म के प्रबन्धकों को फर्म की बाजार में स्थिति बनाये रखने, सुदढ़ करने अथवा लाभ बढ़ाने में मार्गदर्शन करते हैं। मांग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान प्रबन्धकीय निर्णय तथा भावी नियोजन में सहायक होते हैं। मांग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि फर्म की वस्तु विशेष की बाजार में वर्तमान में औसतन कितनी मांग है, यह मांग किन–किन तत्वों से प्रभावित होती है, बाजार में वस्तु के कौन–कौन से स्थानापन्न उपलब्ध है तथा वस्तु विशेष की भावी मांग कितनी होगी। फर्म के मांग विश्लेषण एवं पूर्वानुमान सम्बन्धी निर्णय सही होने पर फर्म अधिक लाभ कमाती है तथा निर्णय गलत होने पर हानि उठाती है।

2 उत्पादन नियोजनः– प्रत्येक फर्म किसी विशेष उत्पादन कार्य में लगी होती है, अतः उसे उत्पादन नियोजन एवं प्रबन्ध करना होता है। फर्म को अपने साधनों तथा उनसे उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं को ध्यान में रखकर लाभदायक निर्णय करने होते है। अपने कौन से साधनों को, कितनी मात्राा में, कौनसी वस्तु के उत्पादन में लगायें जिससे फर्म न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकें। प्रबन्धकों को उत्पादन कार्य जो कि आदान–प्रदान के पारस्परिक भौतिक सम्बन्ध की व्याख्या करता है, का समुचित ज्ञान होना चाहिए।

3 लागत विश्लेषणः– प्रबन्धकों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य फर्म के लाभ को अधिकतम करने के लिए लागतों की व्याख्या करना तथा नियन्त्राण करना होता है। लागतें अनेक प्रकार की होती है जैसे सीमान्त लागत, परिवर्तनशील लागत, स्थिर लागत आदि। इन विभिन्न लागतों को कम करके ही लाभ अधिक कमाया जा सकता है। लागतों को उसी समय कम किया जा सकता है जब लागतों की प्रवत्ति तथा उनको प्रभावित करने वाले तत्वों के सम्बन्ध में खोज एवं अनुसन्धान कार्य किया जाए। अनेक बार प्रबन्धकों को लागतों को प्रभावित करने वाले समस्त तत्वों का ज्ञान नहीं होता है अथवा उन पर प्रबन्धकों का नियन्त्राण नहीं होता, अतः उन्हें लागत सम्बन्धी अनिश्चितता के वातावरण में कार्य करना होता है। आर्थिकलागतों का विश्लेषण लाभ–नियोजन तथा उचित मूल्य नीति निर्धारण में भी सहायक सिद्ध होता है। लागत विश्लेषण के अन्तर्गत लागत अवधारणायें तथा वर्गीकरण एवं लागत व उत्पादन सम्बन्ध सम्मिलित होते हैं।

4 मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीतियाँ एवं व्यवहार मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीतियाँ एवं व्यवहार मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीतियाँ एवं व्यवहार मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीतियाँ एवं व्यवहार मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीतियाँ एवं व्यवहार ;च्तपबपदह च्वसपबपमे ंदक च्तंबजपबमेद्धकृ मूल्य फर्म के लिए आगम होता है। अतः मूल्य का निर्धारण व्यावसायिक अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विषय है। फर्म की सफलता मूल्य निर्धारण सम्बन्धी निर्णयों पर निर्भर करती है। इसके अन्तर्गत बाजारों के विभिन्न प्रारूपों में मूल्य नीतियों तथा व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। मूल्य पूर्वानुमानों का अध्ययन भी इसी का भाग होता है। विभेदात्मक मूल्य निर्धारण तथा विभिन्न प्रकार छूट योजनाएँ भी मूल्य निर्धारण सम्बन्धी नीति एवं व्यवहार के अन्तर्गत ही आती है। फर्म की अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन मूल्य नीतियों का अध्ययन भी इसमें किया जाता है। 5 लाभ प्रबन्धः– व्यावसायिक फर्मों की स्थापना लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती है। दीर्घकाल में फर्म की सफलता का मापन लाभ के आधार पर ही होता है। लाभ आगम तथा लागतों पर निर्भर करता है। लागत तथा आगम अनेक कारकों से प्रभावित होते है जिनमें से कुछ कारक तो फर्म के लिए आन्तरिक होते हैं तथा कुछ बाह्य। यदि भविष्य के बारे में फर्म को इन कारकों का सही ज्ञान होता है तो लाभ का विश्लेषण बहुत सरल होता है। परन्तु फर्म अनिश्चितता के वातावरण में विभिन्न अनुमानों एवं आशाओं के आधार पर कार्य करती है। इसलिए लाभ का नियोजन एवं प्रबन्ध व्यावसायिक अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण एवं जटिल कार्य है।

6 पूँजी प्रबन्धः– व्यावसायिक फर्मों की समय≤ पर पूँजी का विनियोजन करना होता है। पूँजी विनियोजन सम्बन्धी निर्णयों में एक ओर भारी राशियों का प्रश्न होता है तथा दूसरी ओर इनमें एक बार विनियोजन कर देने के बाद निर्णयों को वापस परिवख्तत करना बहुत कठिन होता है। ये निर्णय सर्वोच्च स्तर पर ही किये जाते है। व्यावसायिक अर्थशास्त्र में पूँजी प्रबन्धक बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें पूँजी की लागत, पूँजी पर लाभ–देयता तथा विभिन्न परियोजनाओं में से उपर्युक्त परियोजना या परियोजनाओं का चुनाव सम्मिलित होता है।

7 अनिश्चितता के अन्तर्गत निर्णय सिद्धान्तः– प्रबन्धकों को बहुत से निर्णय अनिश्चितता, के वातावरण में लेने होते हैं। अनिश्चितताएँ अनेक प्रकार की होती है जैसे माँगं की अनिश्चितता, लागत की अनिश्चितता, पूंजी की अनिश्चितता आदि। इन अनिश्चितताओं के कारण निर्णय प्रक्रिया अधिक जटिल हो गई है। अनिश्चितता की स्थिति में निर्णय लेने के लिए अनेक सांख्यिकीय विधियों का विकास किया गया है। आर्थिकविश्लेषण के यन्त्राों को इस तरह से परिशोधित किया जा रहा है कि जिससे अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए निर्णय प्रक्रिया को तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक आधार प्रदान किया जा सके।

8 विक्रय प्रोत्साहन एवं व्यूह–रचनाः– व्यावसायिक प्रबन्धक को विक्रय–व्यूह रचना के प्रति भी पर्याप्त ध्यान देना होता है। विक्रय लागतें विक्रय व्यूहरचना पर निर्भर करती है। विक्रय व्यूह रचना पर ही विक्रय की मात्राा निर्भर करती हैं। विक्रय प्रोत्साहन पर कितना व्यय किया जाए, विज्ञापन की मात्राा, आकार एवं प्रकार क्या हो, यह सब प्रबन्धक को देखना होता है। व्यावसायिक अर्थशास्त्र में विक्रय लागतों, विक्रय प्रोत्साहन योजनाओं एवं विक्रय व्यूह रचना व व्यवस्था का अध्ययन करना होता है। उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक अर्थशास्त्र में एक व्यावसायिक फर्म के सामने उपस्थित होने वाली विभिन्न अनिश्चितताओं से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं आर्थिक सिद्धांतः[4]–

व्यावसायिक अर्थशास्त्र के स्वभाव तथा इसकी विशेषताओं के अध्ययन के आधार पर निम्न अर्थिक सिद्धांन हैं :– 1 अर्थशास्त्र में आर्थिक सिद्धान्तों का विवेचन किया जाता है जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र में इन सिद्धान्तों का व्यावसायिक फर्म की समस्याओं के समाधान हेतु प्रयोग किया जाता है।

2 व्यावसायिक अर्थशास्त्र का स्वभाव व्यष्टि अथवा सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय है जबकि अर्थशास्त्र का स्वभाव व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र दोनों ही प्रकार का होता है।

3 व्यावसायिक अर्थव्यवस्था में फर्म की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। यह व्यष्टि– मूलक अध्ययन है परन्तु इसका सम्बन्ध व्यक्ति विशेष की समस्याओं से नहीं होता है। जबकि अर्थशास्त्र का सम्बन्ध व्यक्ति तथा फर्म दोनों से ही होता है।

4 व्यावसायिक अर्थशास्त्र में लाभ सिद्धान्त का भी अध्ययन किया जाता है परन्तु वितरण के अन्य सिद्धान्तों की इसमें विशेष उपयोगिता नहीं होती है जबकि सूक्ष्म अर्थशास्त्र में वितरण के सभी सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

5 अर्थशास्त्र के सिद्धान्त तथा धारणाएं व्यावहारिका से दूर, मान्यता प्रधान तथा काल्पनिक होती है जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र की अवधारणाएं व्यावहारिक होती हैं।

6 व्यावसायिक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की ही एक विशिष्ट शाखा है अतः अर्थशास्त्र अधिक व्यापक विषय है।

7 अर्थशास्त्र अधिक पुराना विषय है, जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र केवल द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विकसित विषय है।

8 अर्थशास्त्र वर्णनात्मक विषय अधिक होता है, जबकि व्यावसायिक अर्थशास्त्र निर्देशात्मक विषय अधिक होता है।

9 व्यावसायिक अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सम्बन्ध

निष्कर्षः– उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि व्यावसायिक अर्थशास्त्र का व्यावसायिक नीतियों के निर्धारण में बहुत ही उपयोगी है। व्यावसायिक अर्थशास्त्र द्वारा माँग एवं उत्पादन के साथ–साथ लागत के सम्बन्ध में भी निर्णय लेने में आसनी होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1–डॉ0 एच0 के सिहं एवं डॉ0 मीरी सिंह–अर्थशास्त्र एवं लोक वित्त पेज0नं02

2–डॉ0 जय प्रकाश मिश्र–व्यावसायिक अर्थशास्त्र पेज0नं07

2क– डॉ0 एच0 के सिहं एवं डॉ0 मीरी सिंह–अर्थशास्त्र एवं लोक वित्त पेज0नं013

3–डॉ0 वी0सी0 सिन्हा–यावसायिक अर्थशास्त्र पेज0नं026

4–अर्थशास्त्रा प्रबन्धकीय एम.ए. अर्थशास्त्रा (उत्तरार्द्ध) दूरस्थ शिक्षा निदेशालय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक– पेज0 नं0 12